उत्तराखण्ड के बोक्साओं की आस्था एवं लोक मान्यताएँ

ज्योति डोभाल
एम.एस. पब्लिक स्कूल बहादराबाद (हरिद्वार)

बोक्साओं में धर्म के प्रति विशेष आस्था एवं विश्वास उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में विशेष रूप से परिलक्षित होता है। ये वनों एवं प्रकृति के अतिनिकट होने से प्रकृति पूजन एवं आत्म पूजक समुदाय माना जाता है। इनका मानना है कि मानव आत्मा का मृत्यु के बाद भी अस्तित्व बना रहता है। देवी–देवताओं की आत्माएँ भी प्रबल होती हैं जो कि हमारे जीवन की गतिविधियों को निर्धारित एवं निर्देशित करती रहती हैं। मनुष्य इन आत्माओं के कुप्रभावों से बचने के लिए उनके प्रति आस्था के भाव जागृत करके उनकी पूजा अर्चना करके उन्हे प्रसन्न रखता है। बोक्साओं के गाँव के निकट आम या पीपल वृक्ष के नीचे ग्राम रक्षक देवी 'खेड़ी देवी' का थान (स्थान) बना होता है। बोक्साओं की मान्यता है यह ग्राम देवी हमारे खेतों में फसल एवं पशुओं की रक्षा करती है। साथ ही बूढ़े, बच्चे, युवाओं को व्याधियों, रोगों, वायु–विकारों तथा भूत–प्रेत जैसी दुष्ट आत्माओं के कुप्रभावों से रक्षा करती है। देवी को प्रसन्न रखने के लिए जेठ माह में समस्त गाँव के लोग सामूहिक पूजन व भण्डारा आयोजित करते हैं। दुष्ट आत्माओं की शांति के लिए बकरे की बलि भी चढ़ायी जाती है। देवी के मन्दिर में प्रत्येक बोक्सा परिवार अपनी तरफ से धूप–अगरबत्ती लौंग व बतासे चढ़ाकर अपने परिवार की सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। यह पूजा ''ढलैया पूजा'' के नाम से जानी जाती है।

बोक्साओं में शिव या महादेव जी के प्रति विशेष आस्था देखने को मिलती है। तराई के काशीपुर, बाजपुर एवं गदरपुर के बोक्सा परिवारों के घरों के आंगन में शिवलिंग की स्थापना की हुई रहती है। प्रत्येक दिन प्रातः स्नान करके घर–परिवार के सदस्य शिवलिंग में धूप, दीप जलाकर पानी चढाते हैं। श्रावण मास में प्रत्येक परिवार से 'कावड़' चलती है। कांवड़ यात्रा में बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति भावना के साथ बूढ़े–युवा कावड़ियें दूर–दूर से पैदल चलकर किसी पवित्र नदी या हरिद्वार आदि तीर्थ स्थानों से गंगाजल लेकर शिवरात्रि के पर्व में अपने घर पर स्थित शिवलिंग में गंगाजल चढ़ाते हैं, स्त्रियाँ पुत्र प्राप्ति की कामना के लिए व्रत रखती है। शिवरात्रि के पर्व पर सभी घरों में भजन–कीर्तन होते रहते हैं। शिवलिंग पूजा के अलावा बोक्साओं में तीन प्रमुख देवीयों – काशीपुर देवी, अटरिया देवी एवं इलावसा देवी की पूजा की जाती है। इन तीनों देवियों के मन्दिर क्रमशः काशीपुर, रूद्रपुर एवं बरेली के समीप स्थित है। बुक्साड़ क्षेत्र के काशीपुर स्थान पर स्थित देवी को वालासुन्दरी के नाम से जाना जाता है। शेष दो देवियाँ बुक्साड़ क्षेत्र के बाहर स्थापित हैं। प्रत्येक तीसरे वर्ष जेठ माह में सभी गाँवों के लोग मिलकर 'कराही पूजा' का आयोजन किया करते हैं। कराही पूजा में विशेष रूप से हलवा (आटे से निर्मित) का प्रसाद बनाकर वितरित किया जाता है। कहीं–कहीं पर बकरे की बलि भी चढ़ाई जाती है। देवी की पूजा करने के पश्चात बोक्सा लोग खूब मदिरा एवं बकरे का मांस खाकर नृत्य–संगीत में मस्त हो जाते हैं।

बुक्साड़ क्षेत्र में सांकरिया देवता जिसे पशुओं का रक्षक देवता माना जाता है। सांकरिया देवता की स्थापना गाँव से दूर जंगल में पेड़ों के बीच ''देवता का प्रतीक लोहे से बनी सांगल'' किसी पेड़ पर ठोक दी जाती है। मान्यतानुसार सांकरिया देवता हमारे पशुओं की जंगल में चुगते समय बाघ व अन्य जंगली जानवरों एवं बीमारियों के प्रकोप से बचाता है। देवता को प्रसन्न करने के लिए वर्ष में एक बार सुअर या मुर्गे की बलि चढाई जाती है। इस मांस को सभी बुक्सा परिवार प्रसाद के रूप में बाँटकर खाते हैं। गाँवों में स्थित देवी भवानी तथा काली माता के मन्दिर में भी विशेष पर्वों पर बकरे तथा मुर्गे की बलि चढ़ाई जाती है। सभी लोग देवी के मन्दिर स्थित प्रागंण में बैठकर ढोलक–मंजीरे की थाप के साथ खूब भक्ति भावना से प्रेरित होकर भजन कीर्तन करते रहते हैं कि –

देवी तेरा भवन पूरब में कहिए,
दुविधा ध्यावे पछिम दिशा में, सवे चोलि वाली री।
देवी तेरा भवन पहाड़ों में रहिये।
दुनिया ध्वावे दखिन दिशा को, सवे चोलि बारी री।
ज्वाला तेरा भवन पछिम में कहिए,
दुनिया ध्वावे दखिन दिशा में, सवे चोलि वाली के।
देवी तेरा भवन दखिन में कहिए,
दुनिया धावे चोखड़े को, सवे चोले वाली री.........। [16]

उक्त भजन में देवी को ऊँचे पहाड़ों पर निवास करने वाली तथा चारों दिशाओं में व्याप्त बतलाया गया है। देवीयों के प्रति विशेष आस्था बोक्साओं में देखने को मिलती है। इन देवीयों के अतिरिक्त बुक्सा हुलाका देवी, चण्डी देवी, मंनसामाई आदि को भी पूजते हैं। कोटद्वार भावर में निवास करने वाले बोक्सा हरिद्वार स्थित मंनसादेवी, चण्डी देवी के मन्दिर में एवं कोटद्वार स्थित सिद्धबावा के मन्दिर में भी नारियल या गुड़ की भेली चढ़ाकर अपनी मनोकामना पूर्ण होनें की कामना करते हैं।

जादू–टोना (तंत्र–मंत्र)

बोक्सा समाज आत्मपूजक समाज रहा है। रामनगर, काशीपुर एवं बाजपुर के बोक्सा अपने पूर्वजों की आत्मा का पूजन करते हैं। इनमें मनीराम ठेकेदार, कोधन पद्यान, डलपुरिया एवं बुक्सारों पधान प्रमुख है। इन पूर्वजों की आत्मा को आज भी पूजा जाता है। इनके सम्बन्ध में प्रचलित कहानी है कि :–

मनीराम ठेकेदार रामनगर के दावका नदी के किनारे स्थित बुक्सा गाँव के प्रधान थे। वे महा–तान्त्रिक विद्या में निपुर्ण थे और उन्होंने अपनी कठिन साधना के आधार पर देवी की सिद्धी प्राप्त कर ली थी। उन्होंने बोक्साओं के लिए तंत्र–मंत्र की सिद्धियों से अनेक लोक हितकारी न्याय दिलाने वाले कार्य किये थे। इसलिए आज भी मनीराम ठेकेदार की आत्मा का पूजन किया जाता है।

कोधन पधान बाजपुर के समीप मण्डियाहाट गाँव के जमीदार व मुखिया थे, जबकि डेलपुरिया डेलपुर गाँव के प्रधान व भरारे थे। इन्होंने भी अपनी तान्त्रिक सिद्धियों द्वारा बोक्साओं के हितार्थ कार्य किये थे। इसी आस्था एवं विश्वास के साथ आज भी लोग इनके मन्दिर में जाकर मनौती मांगते हैं, जो कि अवश्य ही पूर्ण होती है। मन्नत पूरी हो जाने पर बोक्सा लोग इनकी आत्मा को पूजते हैं। तत्रं–मंत्र विद्या में पारंगत व्यक्ति को 'भरारे' कहा जाता है। भरारे द्वारा तंत्र–मंत्र या जादू–टोना जनहित के कार्य किये जाते हैं। जब कोई व्यक्ति बुखार, पेट दर्द, पीलिया, ज्वर, सर्पदंश या बिच्छू दंश व प्रेतआत्माओं के प्रकोप से घिर जाता है तो भरारे या भकत द्वारा अपनी तान्त्रिक विद्याओं द्वारा इन समस्त व्याधियों को दूर करने का कार्य किया जाता है। बोक्साओं की मान्यता है कि भरारे अपनी तंत्र विद्या में पारंगत होते हैं। जिससे बीमार व्यक्ति एकदम ठीक हो जाता है। प्राचीन समय से ही बोक्सा जादूई विद्या का प्रचलन बोक्सा समाज पर रहा है। आज भी जो लोग तंत्र–मंत्र पर आस्था व अटूट विश्वास रखते हैं उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

पशुओं की गला घोंटू, खुरपका, मोतीझरा, अफारा आदि बीमारियों को भी तन्त्र–मंत्र से ठीक किया जाता है। खेतों में खड़ी फसल को तंत्र–मंत्र के द्वारा पक्षियों एवं पशुओं से होने वाले नुकसान से भी बचाया जाता है। वर्तमान में बोक्साओं का कहना है कि नये सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास के चलते हुए लोगों में जादू–टोने एवं तंत्र–मंत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास घटता चला जा रहा है। आज रोगी व्यक्ति को अस्पताल में उपचार के लिए ले जाया जाता हैं पहले तो जब अस्पताल सुविधाएँ नहीं थी तो तंत्र–मंत्र से ही रोगी को रोग मुक्त किया जाता था।

प्राचीन समय में बोक्साओं की तांत्रिक शक्ति इतनी प्रबल होती थी कि वे कोसो दूर बैठे व्यक्ति को भी तान्त्रिक विद्या द्वारा कत्ल कर देते थे। इस प्रकार की कई किंवदंतियाँ आज भी बोक्सा समाज में व्याप्त हैं। कहते हैं कि ''माल के बोक्सा की विद्या मारूँ, पर्वत के शौका की विद्या मारूँ''[18] लेकिन बोक्साओं का कहना है कि इस प्रकार के जादू–टोना से लोग जब परेशान हो गये तो गढ़वाल नरेश 'सुदर्शन शाह' ने बोक्साओं को अपने दरवार में बुलाकर उनकी तांत्रिक विद्या की पोथियों (पुस्तकों) को गंगा में फिंकवा दिया और ''न रहे बांस न बजे बांसुरी'' युक्ति पर इस खतरनाक बोक्साड़ी विद्या का अन्त करवा दिया।[19] आज तान्त्रिक व्यक्ति को लोग ठग या ढोंगी कहकर पुकारते हैं। वह तंत्र–मंत्र करने के लिए लोगों से मुर्गा, शराब व रूपये ले लेता है। कहीं पर उसका तंत्र कार्य कर देता है और जहाँ पर तन्त्र कार्य नहीं करता है तो वे लोग उसे अंधविश्वास कहने लग जाते हैं। जिससे आज लोगों का बोक्साड़ी तान्त्रिक विद्या से विश्वास उठ चुका है।

बाजपुर के बोक्साओं में एक कहानी प्रचलित है कि बहुत वर्षो पूर्व बोक्साओं का पूर्वज जंगल में शिकार खेलते हुए जा रहा था तो मार्ग में उसे एक सरोवर में जलपरी स्नान करते हुए दिखायी दी। उस परी ने अपने वस्त्र सरोवर के किनारे छोड़ रखे थे। शिकारी कपड़े उठाकर अपने घर ले गया वे वस्त्र चमत्कारी थे। जब परी ने शिकारी का पीछा किया तो उसने अपनी तान्त्रिक शक्ति से उसे अपनी रखेल बना दिया और कुछ समय बाद उसका एक पुत्र हुआ, जिसका नाम 'बुज्जा' रखा गया। बुज्जा जब जवान हुआ तो उसके पिता (भरारे) ने उसका विवाह कर दिया। विवाह के दिन उसने अपनी 'दूधाचारी प्रथा'' में माँ के दूध का कर्ज चुका दिया। इसी परम्परा से आज भी बोक्साओं में ''दूधाचारी प्रथा'' का चलन है। बुज्जा ने जब दूधाचारी रस्म सम्पन्न की उसी समय परी ने बुज्जा के पिता से अपने वस्त्र वापस माँगने को कहा तो भरारे पिता ने जैसे ही वस्त्र परी को सौंपे तो वह उसे छोड़ कर चली गयी। बुज्जा मनमानी व जिद्दी स्वभाव के चलते उसने एक दिन गुस्से में अपने पिता को गोली मारकर बन्दूक सहित दफना दिया। वह प्रेतात्मा में परिवर्तित हो गया। कहा जाता है कि आज भी जब उसकी आत्मा किसी पर अपना कुप्रभाव दिखाती है तो वह व्यक्ति बीमार हो जाता है। उसे पूजा–अर्चना करके बलि देकर सन्तुष्ट करना पड़ता है।

बोक्सा लोग भूतप्रेत, बुरी आत्माओं के अच्छे जानकार होते हैं। इस विद्या में पारंगत व्यक्ति को 'सयाना' कहते हैं। सयाना वशीकरण, सम्मोहन विद्या से भूत–प्रेत एवं बुरी दृष्टि को तंत्र–मंत्र, तावीज, गण्डा तैयार करके दूर कर देता है। सयाने को सूफी, फकीरों, सन्तो के द्वारा सिद्धी प्राप्त होती है। एक प्रसिद्ध सयाना–प्रेम सिंह, निवासी गदरपुर (उधमसिंह नगर) से सम्पर्क करने पर मंत्र बड़ी विनती करने पर प्राप्त किया जो इस प्रकार है :–

खुर्द मौजे हस्ती, मक्के महीने की बस्ती
खुदा की खुदाई मानकर, मौहम्मद की बादशाही को मानकर।
फातमा बीवी को मानकर, दुलदुल घोड़े को मानकर,
लहर तेरी जस तेरा, चले–चले कौन चले।
दरिया माँ तीस ख्वाजा चले, मंत्रों के परिणाम चले।
मेरे गुरू का वचन साचा, देखे दुनिया तेरा तमाशा।[20]

यह मंत्र रोगों को भगाने, प्रेत आत्मा को शान्त करने में प्रयुक्त किया जाता है। इसी प्रकार से अन्य कई मंत्र ऐसे होते थे जो कि स्वयं व्यक्ति मंत्रोचारण करके आदमखोर बाघ के रूप में मनुष्य का भक्षण करने लग जाता था। वर्तमान में बोक्साओं में शिक्षा के विकास के साथ बाह्य समाज के सम्पर्क में आने से तंत्र–मंत्र एवं जादू–टोने जैसी दुष्प्रभावी विद्याएँ विलुप्त हो चुकी हैं। लेकिन बुजुर्ग एवं पुरानी रूढ़िवादी अंधविश्वासी मान्यताओं से जुड़े कुछ ही बोक्साओं को तंत्र–मंत्र, जादू–टोना पर विश्वास कायम है। वे इन मंत्रों का प्रयोग बीमारी के प्रकोप से बचने, शत्रु से बदला लेनें, पशुओं को बीमारी से बचाव के लिए किया करते हैं। सभी धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने में भी 'भरारे' को विशेष सम्मान प्राप्त है। अतः आज भी समाज में पुरोहित या ज्योतिषी की तरह 'भरारे' को विशेष

महत्व दिया जाता है। :भरारे' आज भी पुरोहित या ज्योतिषी की तरह मानव के जीवन में घटित घटनाओं या भविष्य में घटने वाली घटनाओं के बारे में पहले सूचित करने की क्षमता रखता है। बुक्साड़ क्षेत्र के सभी धार्मिक कार्यों को कराने के लिए 'भरारे' को आमंत्रित किया जाता है। 'भरारे' के आदेशानुसार ही आज भी बोक्सा समुदाय जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार तक के समस्त धार्मिक क्रियाकलापों को किया जाता है।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एकसूत्र में पिरोया जा सकता है।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती